वर्ष-01 - अंक 03 - पृष्ठ-04 - मासिक समाचार पत्र - इंदौर / अहमदाबाद से एक साथ प्रकाशित संस्करण

वर्ष 1 - अंक 3 | मूल्य ₹ 5.00

हमारा संकल्प सेवा और समर्पण

हूमड़ वाणी

अंतर्राष्ट्रीय संगठन का दर्पण

31 अगस्त, 2024 । शनिवार | फेडरेशन आफ हूमड़ जैन समाज का मुख पत्र | धर्म के लिए जिए, समाज के लिए जिए, ये धडकने, ये स्वांस हो, हूमड़ समाज के लिए

फेडरेशन ऑफ हूमड जैन समाज (अन्तर्राष्ट्रीय संगठन)

सम्पादकीय

जीवन विकारो व वासनाओ से भरा है, उपासना करने के लिए इन विकारो से मुक्त होना आवश्यक है। चातुर्मास चार माह धर्म साधना के होते है, इन्हे व्यर्थ न जाने दे। यह समय विश्रांति का नहीं अपितु अपना भविष्य उज्जवल बनाने के लिए है। तप, त्याग,धर्म, ध्यान और समाज सेवा से, सभी अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाये । सु-संस्कारो से ही संयम मार्ग प्रशस्त होता है। मनुष्य का आचरण ही उसका धर्म है। बिना शुद्ध आचरण के मनुष्य का कोई महत्व नहीं है। इसके लिए संतो के समागम से जीवन को निर्मल एवं पवित्र बनाना चाहिए। प्रवचन श्रवण करना चाहिये

यशपाल जुवां

ईडर में सम्पन्न हुआ हूमड़ चेतना का महाकुंभ

1500 से अधिक हूमड़ जैन पूरे देश से जुटे

अंतराष्ट्रीय फेडरेशन ऑफ हुमड जैन समाज की वर्ष 2024. 2025 की नई कार्यकारी का शपथ विधी समारोह का सफल आयोजन 14 व 15 जुलाई को हूमड़ जैन समाज की उद्गम स्थल ईडर में आयोजित किया गयाए सम्पूर्ण भारत के विभिन्न प्रांत मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र एवं दक्षिण भारत सभी प्रांत से महिलाओ व पुरुषो ने अपना अमूल्य समय निकालकर कर शपथ विधी समारोह को सफल बनाया। कार्यक्रम समारोह अध्यक्ष श्री दिनेश जी खोडनिया सागवाडा, थे। विशेष अतिथी श्री विजयजी कोठारी, कुशलगढ, डॉ. शालिन जी शाह, बड़ौदा, श्री विमलचंदजी गांधी, इंदौर, श्री राजेश जी शाह, उदयपुर, श्री किशोरजी शाह, बारामती, श्री कमलजी पाड़लिया, इंदौर, श्री चेतन ए शाह वालेकर, श्री सुनील जी कोठारी, घाटोल, इडर हूमड़ समाज ने इस आयोजन को महोत्सव के रुप में मनाया, इडर समाज के महिला हो या पुरुष-बच्चा हो या वरिष्ठजन सभी जन अपनी सहभागीता मे तत्पर रहे। 14 जुलाई को सुबह हिम्मत नगर रेल्वे स्टेशन से ही इडर समाज ने प्रत्यक्ष रुप से अपनी सेवा देना प्रारंभ कर दी थी, अन्य प्रदेश के यात्रीगण एक दिन पुर्व ही आना प्रारंभ कर दिया था, उन सभी के भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था ईडर हूमड़ समाज के सेवाभावी समाज जन निभा रहे थे, मध्यप्रदेश एवं राजस्थान के अधिकतर यात्रीगण ट्रेन से ही आ रहे थे। प्रातःकालीन चाय दुध व स्वल्पाहार की समुचित व्यवस्था डूंगरपुर स्टेशन पर की गई थी। डूंगरपुर के श्रीमान विजय जी जैन के विशेष सहयोग से गरमा गरम स्वल्पाहार का आनंद सभी यात्रीगण को मिला। यात्रीगण जब हिम्मतनगर पहुंचे तो ईडर हूमड़ समाज के युवा 35 वाहनो के साथ सभी यात्री को हिम्मतनगर से ईडर ले जाने हेतु तत्पर थे। बीना कीसी भी प्रकार की परेशानी के मध्यप्रदेश के सभी समाज जन को पावापुरी अतिथी भवन में आवास प्रदान कराया। सभी को पूर्वनियोजित कार्यक्रम अनुसार अलग अलग वाहनो से ईडर गढ पहाड पर जैन समाज की प्राचीन धरोहर अतिशयकारी मंदिर के दर्शन लाभ मिला, वहीं पर भुभर्ग से निकली प्रतिमाओ के दर्शन किये।

शपथ विधि समारोह टाऊन हाल पर नजारा ही अलग सा मानो बारात का स्वागत हेतु तत्पर ईडर हूमड़ समाजगण

सभी अतिथियो के स्वागत हेतु एक सुसज्जित बेंड, करीब 25 से 30 भारत में हुमड समाज में महिलाओ द्वारा संचालित एकमात्र बेंड, सभी अतिथियो का गुलाब के पुष्प गुच्छ से स्वागत किया

...हूमड़ चेतना का महाकुंभ

गया। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो बारात का स्वागत हेतु तत्पर ईडर समाज खड़ा हो। नव मनोनीत कार्यकारीणी की बारात का आनंद ही अलग था। सभी का टाऊन हाल आगमन होते ही ईडर हूमड़ समाज की टीम सभी से आग्रह पुर्वक स्वादिष्ट भोजन हेतु आमंत्रित कर रही थी। सभी ने स्वादिष्ट भोजन का लाभ आत्मीयता के साथ लिया एवम सराहना भी की। टाऊन हाल में सुविधा की द्रष्टि से प्रवेश हेतु सभी को प्रवेश रजिस्ट्रेशन के आधार पर ही दिया गया था, पुर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार भोजन पश्चात दोपहर को प्रथम सत्र का शुभारंभ हुआ। समारोह के कुशल संचालक श्री अजीत कोठीया, डडुका श्री विपन पंचोरी, अहमदाबाद, श्रीमती आरती पाडलिया एवं श्रीमती अंजु गांधी ने प्रत्येक हूमड़ जन को एक सूत्र में सभी संचालको द्वारा आदर पुर्वक सभी अतिथी को मंचासीन कराकर शपथ विधी समारोह हेतु मंच को सुसज्जित किया। सभी अतिथी के मंच पर आगमन के बाद मंचासीन अतिथियो के द्वारा शपथ विधी समारोह के प्रारंभ के पुर्व भगवान संभवनाथजी के चित्र का अनावरण कर दिप प्रज्वलित कर शपथ विधी समारोह प्रारंभ किया। ईडर समाज की बालीका ध्वनि महावीर भाई दोशी और भूमिका डी दोशी ने अपनी प्रभु वंदना से ओत-प्रोत नृत्य प्रस्तुत कर मंगलाचरण की प्रस्तुती दी। संचालकगण ने क्रमबद्धता के साथ सभी पदाधिकारीयों के द्वारा समारोह अध्यक्ष एवं सभी विशेष अतिथीयो का स्वागत पगडी, माला, श्रीफल से किया। साथ ही अविस्मरणीय आयोजन की यादे चिरस्थाई बनी रहे इसलिए सभी को प्रतिक चिन्ह देकर सम्मानित किया।

फेडरेशन ऑफ हूमड़ जैन समाज की राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं प्रोविंस कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह एवं हूमड़ महाकुंभ 14 जुलाई को गुजरात के ईडर शहर मे अपरान्ह एक बजे से प्रारंभ होकर सांय 6बजे तक सम्पन्न हुआ। राष्ट्रीय कार्यकारिणी अध्यक्ष विपिन गांधी के नेतृत्व में 31सदस्यीय कार्यकारिणी को अहमदाबाद निवासी पूर्व अध्यक्ष श्री निरंजन कुमार जुआं ने शपथ दिलाई। महामंत्री महेंद्र बंडी, गुजरात प्रोविंस अध्यक्ष श्रीपाल शाह, ईडर समाज अध्यक्ष महावीर दोशी, महिला प्रकोष्ठ की कोशल्या पतंग्या, चिराग भाई, धर्मेंद्र दोशी वसंत दोशी पूर्व अध्यक्ष के नेतृत्व में कार्यक्रम रोचकता से परिपूर्ण था। समारोह का संचालन अजीत कोठिया डडूका, आरती पाडलीया मंदसौर विपिन पंचोरी अहमदाबाद तथा अंजू गांधी मुंबई ने किया। सभी प्रोविंस की शपथ विधि श्री चकोर गांधी एवं श्री कवींद्र कियावत ने सम्पन्न की। राजस्थान प्रोविंस अध्यक्ष धनपाल जैन सरोदा एवम महामंत्री गोवर्धन लाल जैन कुआ को समारोह अध्यक्ष दिनेश खोड़निया ने शपथ दिलाई। आयोजन को कोशल्या पतंग्या, निधि सेठ,महेंद्र बंडी, एवं दिनेश खोड़निया ने संबोधित किया।

विपिन गांधी ने फेडरेशन के आगामी दो साल के कार्यक्रमों का रोड मैप प्रस्तुत किया।आयोजन मे 1500 से अधिक हूमड़ जैनो ने पूरे दे से हिस्सा लिया। रात्रि में समाजजनों के लिये सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसमें श्री चकोर गांधी ने सावधान धंधा बदल रहा है के उपर अपना व्याख्यान दिया जिसे सभी समाजजनों ने सराहा। साथ ही बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी चित्रकार कवि हृदय संगीतकार श्री बाबा सत्यनारायण जी मौर्य ने भारत माता को समर्पित अपनी प्रस्तुतियां देकर उपस्थित समुदाय को हिला दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समाज की स्वस्ति आशीष कोठारी ने नृत्य की प्रस्तुति से सभी को प्रभावित किया एवं जिनाया विराग गांधी ने छोटी सी उम्र में अपनी जिम्नास्टिक की प्रस्तुति से हर किसी को आकर्षित किया।

अध्यक्ष की कलम से

देश विदेश में बसे मेरे हूमड़ समाज के अभिन्न अंग, बिना खुशबू के फूल, बिना पानी के नदी का, जैसे कोई महत्व नहीं होता उसी तरह बिना किसी प्रकल्प के व सकारात्मक सौंच के, किसी संस्था का कोई महत्व नहीं रहता। संस्था को गति देने के लिए पदाधिकारी से भी अधिक महत्वपूर्ण होती है संस्था संचालन की नीति ? अतः संस्था संचालकों को संस्था संचालन की नीति इतनी सरल और तरल बनानी चाहिए कि आम सदस्य तक उसका लाभ पहुंच सके। अन्यथा कानून और कागज में संस्था रह जावेगी और वास्तव में उसके चाहने वाले ही नहीं, जानने वाले भी घटते जाएंगे। अच्छे पदाधिकारी के सिर पर सींग नहीं होते या किसी कॉमिक के कलाकार की तरह अजीबो -गरीब शरीर वाला नहीं होता वह भी एक सामान्य मानव ही होगा, आपके बीच का ही आप जैसा ही, परंतु उसकी सोच, उसका धर्म कुछ अलग होना चाहिए, यह अलग ढंग भी तब कारगर होता है जब उसके साथी कंधे से कंधा मिलाकर उसका साथ दे। फेडरेशन ऑफ हूमड़ जैन समाज समाज भी 18 बसंत देख चुका है एवं एक युवा की तरह जोश भरा काम करने की आवश्यकता है। मानव की तीन मूल आवश्यकताऐं रोटी, कपड़ा और मकान। युवा सपने देखता है ऊंची उड़ान के और सपने पूरा करने के लिए अपने गांव से पलायन एक स्वभावी प्रक्रिया बन गई है। ऐसे में शहर की तरफ रूख करना (शिक्षा एवं व्यवसाय के लिए) आम बात हो गई है। लेकिन शहर में जाकर उसे जिन मुसीबतो का सामना करना पड़ता है यदि सामाजिक संस्थाएं संबल बनकर खड़ी हो जावे तो शायद समाज का विकास तीव्र गति से हो सकता है। फेडरेशन ऑफ हूमड़ जैन समाज की नवीन कार्यकारी इस बार संकल्पित है समाज के विकास के लिए कुछ विशेष योजनाओं को लागू कर जन कल्याण की बात के रास्ते पर आगे बढ़े, सबसे प्राथमिक आवश्यकता कोई भी हूमड़ बंधु अन्न के अभाव से ग्रसित नहीं रहे, शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में अर्थ के अभाव में उसे वंचित नहीं रहना पड़े एवं समाज में आने वाली कुरीतियों को नियंत्रण में लाते हुए सामाजिक समरसता का नया उदाहरण प्रस्तुत करें। रोजगारोन्मुखी कार्यशाला का आयोजन हो । सूदूर बसे हूमड़ के गोत्र बन्धुओं से एकाकार का प्रयास करें । सहायता वही कर सकता है जो स्वयं सक्षम हो गए अतः संस्था को सक्षम बनाना अत्यंत आवश्यक है । संस्था तभी सुदृढ़ बनेगी जब उसके पास अपनी छत हो एवं अपनी छत के नीचे जरूरतमंद को आश्रय दे सके। इसके लिए आवश्यकता है ऐसे बहु आयामी प्रकल्पों को साधने के लिए एक दूजे का हाथ पकड़ कर एक सुंदर मोती की माला बनाने की जिसके अंदर विभिन्न योग्यताओं के समाज जन मिलकर आगे आवे। समाज में भामाशाह की कमी नही है। आवश्यकता है ऐसे दृढ़ विश्वासी बहुआयामी सौंच के साथ आगे बढ़ने की । नमन फेडरेशन के संविधान निर्माताओं को जीनकी दूर दृष्टी में इस आवश्यकता को पहले ही स्थान दिया हुआ है। आऔ इस महा यज्ञ में अपने हिस्से की आहूती दें। तन-मन-धन से प्रत्यक्ष न सही परोक्ष रुप से अनुमोदना करें। यदि यह भी संभव नहीं होवे तो कम से कम हतोत्साहित नहीं करें। ऐसा घरोंदा बनावें, जरूरतमंद साथी सुरक्षित रह सके एवं समाज उन्नति की राह पर बढ़ता हुआ एक नए मुकाम को हासिल कर सके। हूमड़ जैन समाज स्वाभिमानी समाज है । हम समाज के दम पर है। हमारा फर्ज है हम भी समाज को कुछ दें ।

....विपिन गांधी

हूमड़ गौरव गीत ...

हूमड़ हैं हम निकले
खेड़ ब्रह्मा से,
ईडर से हम चले -
सारी दुनिया पे छा गए हम।
सारी दुनिया में फेल गए हम।
क्या क्या न सितम
हमने सहे धर्म की खातिर,
आओ आज चले हम,
जैनत्व की रक्षा को
करे जीवन अर्पण
तन-मन और धन
हैं हूमडो से आस यही....
हूमड़ हैं हम निकले.....।
फैडरेशन के छत्र तले
आज मिले हम
ले ये शपथ हूमड़ के लिए
मर मिटेंगे हम।
हूमड़त्व को संजोने
करे तन-मन अर्पण
युवा हूमडो से आस यही...
हूमड़ हैं हम निकले.....।
ईडर से आगे बढ़के,
सागवाड़ा हम गए,
फिर पूरे विश्व में
कदम हमारे ही पड़े।
लगते हैं मुट्ठी भर
सदा सिरमौर रहे हम
हूमडो की पहचान है यही।
हूमड़ हैं हम निकले.....।
महिला, युवा प्रकोष्ठ को
रचाया हैं इस बार,
युवा शक्ति के कंधो पे
देने जा रहे हैं मार।
एन आर आई को भी हैं
अपने साथ सजाया,
हूमड़ गीत हैं गाया,
सबके दिल पर भी
राज करे हम।
हूमड़ हैं हम निकले.....।।

..... अजीत कोठिया डडूका
जिला बांसवाड़ा राजस्थान

फेडरेशन ऑफ़ हुमड़ जैन समाज की आने वाले वर्षो के लिए दिव्य दृष्टि

राष्ट्र निर्माण में एक जुट होकर समाज उत्थान हेतु कार्य करने के लिए फेडरेशन ऑफ़ हुमड़ जैन समाज के अंतर्राष्ट्रीय संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपिनजी गाँधी व राष्ट्रीय महामंत्री श्री महेंद्र जी बंडी एवं संपूर्ण राष्ट्रीय कार्यकारणी ने गुजरात के इड़र में हुई सपथ विधि समारोह में अपनी दिव्य दृष्टि के परिपत्र से समाज जन को अवगत कराया। संपूर्ण भारत में इस दिव्य द्रष्टी को ध्यान में रखते हुवे सभी प्रोविंस के महिला एवं पुरुष पदाधिकारियो को एक पथ पर चलने के लिए आग्रह किया है जिससे समाज के सभी क्षेत्रो में हम अपने कार्यो के आधार पर समाज सेवा के नए आयाम स्थापित कर सके। स्वास्थ के क्षेत्र में रक्त दान, नेत्र दान, चर्म दान, देह दान हेतु जागरूकता लाना एवं परिवारजनों को प्रोत्साहित करना। समय समय पर आवश्यकता अनुसार रोगो के निवारण हेतु निशुल्क जांच शिविर लगाना। गंभीर बीमारियों से समाज के परिवार को राष्ट्रीय स्तर पर आवश्यकता होने पर स्थानीय संस्था को सहयोग देना। प्राकृतिक चिकित्सा जैसे आहार चिकित्सा , ध्यान एवं योग हेतु प्रोत्साहित करना, एवं चिकित्सा सहयोग हेतु स्थाइ कोस का निर्माण करना। शिक्षा के क्षेत्र में छात्रवृत्ति देना एवं संपूर्ण भारत हेतु स्थाइ कोस का निर्माण करना, कैरियर मार्गदर्शन देना एवं विशेष रूप से समाज का कोई भी बच्चा पैसो के आभाव में शिक्षा से वंचित ना हो इस बात का ध्यान रखते हुवे समाज की साख संस्था से या बैंक से या बिना ब्याज पर ऋण प्रदान कर उस बच्चे की शिक्षा पूरी करने में सहयोग देना हमारा नैतिक कर्त्तव्य रहेगा। हुमड़ समाज की सामाजिक एकता को मजबूत करने के लिए संपूर्ण भारत के हुमड़ समुदायों को एक सूत्र में बांधना सबसे पहला कार्य रहेगा जिससे आने वाले समय में हुमड़ समाज की जनगणना करके अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विवरणिका को प्रकाशित करना साथ ही विदेश में रह रहे हुमड़ परिवारों को भी फेडरशनः ऑफ़ हुमड़ जैन समाज से जोड़ कर सामाजिक एकता की एक मिसाल कायम कर सके। समाज की नारी हो सब पर भारी इस बात को ध्यान में रखते हुए संपूर्ण भारत में सभी प्रोवींसो के सामानांतर महिला प्रोविंस का गठन कर के महिलाओ की भी सभी आयोजनों के सहयोग लेना जिससे समाज की महिला भी अपनी भागीदारी दे सक। समाज की सभी क्षेत्रों में आगे आने के लिए समय समय पर कार्य शालाओ के माध्यम से कुकिंग , बैंकिंग, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, साइबर सुरक्षा, पारम्परिक रीती रिवाज , वेशभूषा, गर्भ धारण संस्कार, पारम्परिक कलाओ का विकास, व्याव्याशिक रूप से इन्वेस्टमेंट प्लानिंग में आगे लाना समाज की १० से १६ वर्ष की बालिकाओ को अपनी सुरक्षा कैसे करे ,,, जैसे अवांछित तत्वों की छेड छाड से कैसे बचे, अपने शील की सुरक्षा कैसे करे इन सब बातो के लिए समय समय पर बदलते परिवेश में प्रक्षिक्षण देना आदि , जबकि हमारे जीवन का आधार ही धर्म है तो धर्म के वैज्ञानिक स्वरुप को हमे समझना और समजाना पड़ेगा क्रियात्मक धर्म के स्थान पर गुनमात्मक धर्म को अपनाना पड़ेगा, अहिंसा के सिद्धांतो का प्रचार प्रसार करके हुमड़ जैन संस्कृति को आगे बढ़ाना एवं सुरक्षिति रखने हेतु आगे आना पड़ेगा। वर्ष पर्यन्त समाज के धर्म प्रेमी तपस्वियों का सम्मान करना। हुमड़ समाज का गौरवशाली इतिहास की जानकारी हर समाज जन तक पहुंच सके इस हेतु भारत के हुमड़ स्मारकों का एकत्रीकरण करना , लेखन सामग्री का संकलन करना, हमारे इतिहास से हमे अवगत करने वालो का सम्मान करना पड़ेगा। वर्तमान समय में हुमड़ जन का दायरा प्रदेश से देश के बाद अंतर्राष्ट्रीय हो गया है जिससे हुमड़ समाज के लोगो का रहने का दायरा काफी दूर दूर हो गया है, परन्तु डिजिटल क्रांति के बाद हम सब अपनी सूचनाओं का जानकारियों का प्रचार प्रसार फेडरेशन की वेबसाइट की माध्यम से करते है साथ ही शीघ्र ही फेडरेशन की इ डायरेक्टरी का कार्य प्रारम्भ करके सभी को एक सूत्र में बांधने की कार्य किया जायेगा। हर सहर की बात घर घर तक पहुंचे इस लिए फेडरेशन ने मासिक समाचार पत्र ₹ हुमड़ वाणी ₹ का प्रकाशन की प्रारम्भ कर दिया ह। समाज का आने वाला कल जो आज का युवा ही है इस बात को ध्यान में रखते हुवे युवा शक्ति को : हुमड़ प्रीमियर लीग क्रिकेट मैच के माध्यम से समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए संगठित कर एक मंच पर लाया जायेगा। युवाओ के लिए उद्योग, प्रतिष्ठानों, एवं सरकारी योजनाओ की जानकारियों से अवगत कराना, आवश्यकता होने पर ओद्योगिक भ्रमण, प्रक्षिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से आगे बढ़ा कर समाज की प्रगति में अपना हाथ बढ़ा सकेंगे।

मंत्री की कलम से

महामंत्री महेन्द्र बंडी की कलम से

सबसे पहले फेडरेशन की परिकल्पना करने वाले पुरोधा पुरुषों को नमन । दूसरा नमन फेडरेशन के संविधान सृजन कर्त्ताओं की, तीसरा नमन सभी पूर्व पदाधिकारियों को जीनके अथक श्रम, सामर्थ्य व समर्पण से फ़ेडरेशन आज जीवन्त है। प्रत्येक पूर्वाध्यक्ष के कार्यकाल में कम या ज्यादा कुछ रचनात्मक कार्य अवश्य हुए । आदरणीय श्रीमान निरंजन जी जुंवा ने फेडरेशन ऑफ हूमड़ जैन समाज को एक पहचान दी, उनके समर्पण के लिए उनका हृदय से आभार मानना आवश्यक है, यह संस्था के प्रति कर्तव्यों के निर्वाहन का सम्मान है । आपने शेशव अवस्था में संस्था को खड़ा किया उस समय किताब कोरी थी जो लिखा जावे नया था । जैसे शिशु अवस्था में जो मिला वह उपलब्धि होती है, जैसे-जैसे उम्र बढ़ी , अपेक्षाएं बढ़ती गई । कुछ पदाधिकारियों के कार्य सघन परिक्षण के थे , कुछ को कोरोना काल का प्रभाव लील गया । हम किसी को कमतर नहीं कह सकते, संविधान निर्माताओं ने प्रत्येक 2 वर्ष में कार्यकारिणी परिवर्तन का जो विधान रखा है उसके प्रति भी यही आशय रहा होगा कि एक ही विचारधारा से आगे बढ़ाने के स्थान पर समाज के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखकर आगे बढ़ना चाहिए । परिवर्तन श्रृष्टि का नियम है, अभी ऐसा प्रतीत होता है की संविधान निर्माताओं ने जिस सोच एवं पवित्रता के साथ में संविधान का निर्माण किया था वह देश काल और परिस्थितियों के अनुकूल अब परिवर्तन चाहता है। समाज हमें बहुत कुछ देवें, यह तभी संभव है जब हम समाज को देना सीखें। यदि हमारे हाथ पैर बांध दिए जावें और फिर परिश्रम की उम्मीद की जावे तब शायद आदमी का निष्क्रिय होना एवं आत्म चिंतन में लगना ही उचित माना जाएगा, आवश्यकता है कुछ बड़ा सौंचने की, कुछ बड़ा करने की, सभी का आधार अर्थ है । संस्थाएं धन संग्रहण के लिए नहीं होती अपितु अपने लक्ष्य को पाने के लिए दौड़ लगाने के लिए खड़ी की जाती है। संस्था ने समाज से निवेदन किया तब आवश्यक सहायता प्राप्त हुई, फिर भी जो कुछ लक्ष्य व उद्देश्य संविधान में निर्धारित थे उनसे हम दूर रहे। ऊंचे पहाड़ पर बैठकर मैदानी बकरियां नहीं चलाई जा सकती है। सिर्फ उपदेश देने से काम नहीं चलेगा, उपक्रम करके हाथ बढ़ाना पड़ेगा, अन्यथा दूसरों की चाल बाधित करने से स्वयं को रोकना पड़ेगा। अब समय है पुनर्चिन्तन का, संस्था कौ एक स्थाई पहचान दिलाने का, कुछ राष्ट्रीय कार्यक्रमों को संजोने का, काम कोई छोटा या बड़ा नहीं होता है, सौंच बड़ी होना चाहिए। हाट बाजार के लिए अकेला बनिया नहीं समूह चाहिए। आओ ऊँचा सौंचे, नई कार्यकारिणी सारथी, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपिन गांधी के नेतृत्व में पूरे जोश से काम कर रही है। श्री विपिन जी गांधी एक परिपक्व विचारों के धनी, अनुभवों व जोश से ओतप्रोत व्यक्ति हैं, जीनके नेतृत्व में हूमड़ युवा मंच, इन्दौर , हूमड़ जैन समाज ट्रस्ट इन्दौर ने सेवा व सुरक्षा के लिए दीर्घकालीन कोष की स्थापना कर किर्तिमान रचा है। संपूर्ण हूमड़ समाज इस नेतृत्व से कुछ सकारात्मक परिवर्तन की आशा लगा रहा है। इस चुनौती पर खरा सिद्ध होना आसान नहीं, पर असंभव भी नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं, किन्तु जो सपने बुने गये उन्हें साकार करने के लिए तेज रफ्तार से सभी को सहयोग का हाथ बढ़ाना होगा। आओ साथ चलें-आगे बढ़े, मान ली तो हार, ठान ली तो जीत...

....महेन्द्र बंडी

संगठन में ही शक्ति है

हूमड़ जैन समाज की सभी बहनों को इस बहूम वाक्य को अपने मन में धारण करने की आज परम् आवश्यकता है। फेडरेशन की नई कार्यकारिणी बने पांच महीने पूर्ण होने आये है, और हमारे पास सिर्फ ढेड़ वर्ष का समय बचा है। इसमें हमें सशक्त महिला संगठन का आकार बनाना है जिससे आने वाले समय में नई महिला कार्यकारिणी को काम करने में आसानी हो। हमने 5 प्रोविन्स बना दिये है, अब हर प्रोविन्स के चेयरमेन की जिम्मेदारी है कि वह अपने प्रोविन्स के हर शहर और हर गाँव में एक हूमड़ संगठन बनावे और उस संगठन को फेडरेशन की संस्थागत सदस्यता प्रदान करें।

महाराष्ट्र जैसे विशाल प्रोविन्स में 100 से अधिक संस्थायें फेडरेशन की सदस्य बन सकती है। इसी तर्ज पर राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, दक्षिण भारत, दिल्ली एन.सी.आर. में भी महिला मंडलों को जोड़कर सशक्त संगठन बनाना है। आप सभी से मेने व्यक्तिगत स्तर पर भी बात की है, आप सभी से विनम्र निवेदन है कि आपको जहां भी अड़चन महसूस हो रही हो आपको मुझसे अपनी बात साझा करें, हम मिल जुलकर गति प्रदान करेंगे।

सशक्त संगठन बड़े कार्यों का बीड़ा उठाने में सक्षम होता है। तो हो जाईये तैयार और लग जावें अपने लक्ष्य की पूर्ति में।

हमारी संस्कृति हमें सिखाती है...

शक्ति ही जीवन है, कमजोरी मृत्यु है
विस्तार ही जीवन है। संकीर्णता ही मृत्यु है।।

आज कर्त्तव्य निर्धारण की वेला में हमें प्रकाश और मार्गदर्शन हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपिन गांधी एवं राष्ट्रीय मंत्री श्री महेन्द्र जी बंडी से भरपूर मिल रहा है, उनकी कार्यशैली हमें प्रेरित करती है, चरैवति-चरैवति।

कौशल्या पतंग्या
राष्ट्रीय प्रभारी-महिला प्रकोष्ठ

हूमड़ जन-जन का खेडब्रहमा

खेडब्रहमा गुजरात राज्य के साबरकांठा जिले में है। इस जिले में यह रायदेश क्षेत्र के अंतर्गत आता है। रायदेश में इडर, खेडब्रहमा, पाल, पोलो सहरो के साथ १७ गांव हुमडो के आवास केंद्र थे। यद्यपि इन स्थानों में कुछ स्थानों पर वर्तमान में हुमड़ आवासित नहीं है , परन्तु यह एक तथ्य है की इस संपूर्ण क्षेत्र में हुमडो के आलावा कोई अन्य जैन जाती नहीं रहती है।

वर्तमान में खेडब्रहमा क़स्बा है। यह इडर से ३५ किमी पर है , यह हिरण्य गंगा (वर्तमान नाम हरणाव) नदी के पक्षिम की तरफ है। इस नदी के आगे जाकर कौशाम्बी और भीमशंकर नदियाँ मिल जाती है। इस संगम के कारन यह क्षेत्र प्रयाग के सामान पवित्र माना गया है, और यहाँ बड़ी संख्या में मंदिर भी थे। यहाँ जैन समाज के भी कई मंदिर थे जिसमे से तीन मंदिर देरोल जो प्राचीन समय में खेड़ब्रह्मा का भाग था , जो पताका लहरा रहा है।

खेड़ब्रह्मा को हूमड़ जाती के उद्भव स्थल होने का गौरव प्राप्त है। हिरण्य गंगा के उत्तर दिशा में हुमड़ जाती निवास करती है। हिरण्य गंगा नदी (हरणाव नदी) की उत्तर दिशा में पुष्पों से आच्छादित भूभाग में हुमड़ जाती निवास करती है। यह सोभा पृथ्वी , सुन्दर मुखवाले , चतुर व् मृदुभाषी हुमड़ो के गोत्र की जननी है। यह आदि पुरुष अर्थात आदिनाथ पुरुदेव के आदर्शो एवं आत्मदर्शन की साधन पथ पर अग्रेषित है और अट्ठारह गोत्रो में विभक्त है। ये सभी कुशल संपन्न होकर अपने बंधू - बांधवो के साथ विस्तार करे। खेड़ब्रह्मा में हुमड़ गोत्र कुंड है। जिसमे हुमडो के १८ तथा पुरोहितो के ९ गोत्रो की कुलिकाएँ है जिसमे गोत्रो की अधिष्ठायत्री कुल देवियो की मुर्तिया थी जो १९८० ई. के बाद कहीं चली गई थी।

यह अत्यंत प्राचीन पौराणिक नगर है।

यह नगर प्राचीनतम जिवंत बस्तियों में एक है। यद्यपि यहाँ की भूमि में बड़ा उत्खनन या शोध कार्य नहीं हुवा है, परन्तु समय समय पर प्राप्त होने वाली वैष्णव, शैव, शाक्त एवं जैन पुरातत्व सामग्री इसके समृध्या कला, शिल्प, वाणिज्य एवं ज्ञान की सूचक है।

इस धार्मिक नगरी को उत्थान- पतन के कई मायने देखने पड़े। इसे राजाओ की मनमानी, लूटपाट एवं तोड़फोड़ साहनी पड़ी। खलीफाओं, खिलजियों, गजनवियों और मुगलो के आक्रमणों की कई बार त्रासदी इसे झेलनी पड़ी। संपत्ति की क्षति के साथ आश्था को भी चोट पहुंची। मंदिरो को तोडा गया , आराध्य देवो की मुर्तिया को खंडित किया गया और कुचला गया। लोग खंडित मंदिरो का जीर्णोद्धार करवाते रहे और मुर्तिया स्थापित करते रहे और पुनः तोड़ फोड़ होती रही। फल स्वरुप लोगो को निष्क्रमण करना पड़ा। मूर्तियों को रेत-मिटटी में गाड़ी दी और कुछ अपने साथ ले गए। आज भी यहाँ मुर्तिया मिलती है। वर्तमान में खेड़ब्रह्मा में कई शैव वैष्णव

मंदिर है जिनको खंडित अवस्था में होने से जीर्णोद्धार कराया गया है। खेड़ब्रह्मा से ८ कीमि दूर डेरोल (देवपुरी) जो पूर्व में खेड़ब्रह्मा का भाग था, तीनो जैन मंदिरो में एवं अन्य शैव - वैष्णव मंदिरो का जीर्णोद्धार करवाकर मुर्तिया प्रतिष्ठित की गई है। दो बावन जिनालयो में से एक आदिनाथ जिनालय जो वि सम्वत की २-3 सदी में निर्मित है, स्थापत्य शिल्प की दृष्टि से बेजोड़ है।

खेड़ब्रह्मा में कितने जैन मंदिर थे - कहना कठिन है - क्योकि कई मंदिर पूर्णतया नष्ट कर दिए जाने से रेत और मिटटी के निचे दब गये। भूगर्भ एवं रेत के निचे से प्राप्त करीब १४० से भी अधिक मुर्तिया अनयत्री ले जाकर स्थापित की गई है। इडर के विभिन्न मंदिरो में एक पद्मावती की मूर्ति सहित १०० से अधिक मुर्तिया खेड़ब्रह्मा से लेकर विराजमान की गई है। इडर के सम्भवनाथ मंदिर के शांतिनाथ की मूर्ति शिल्पकला की अनुपम कृति है। यह मूर्ति महाराजा रायसेन के समय (वि.स. १०१ के आसपास) की लगती है। तारंगा तीर्थ क्षेत्र पर कोटशीला और सिद्धशीला में प्राचीन खड्गासन मुर्तिया भी खेड़ब्रह्मा की है। भीलोड़ा, सागवाड़ा, आंतरी , कलिंजरा आदि स्थानों पर भी खेड़ब्रह्मा से लाइ गई मुर्तिया प्रतिष्ठित मिलती है। इस प्रकार अन्यत्र प्रतिष्ठित मूर्तियों की संख्या को देखते हुवे लगता है की यहाँ २० से कम मंदिर नहीं रहे होंगे। प्रशाशनिक दृष्टि से खेड़ब्रह्मा, इडर राज्य के अंतर्गत रहा है परन्तु ऐसा प्रतीत होता है की यह कभी स्वतंत्रत रियासत या जागीरी रहा होगा। क्योकि एक जनश्रुति बताती है की खेड़ब्रह्मा के भील राजा की मनमानी से क्षुब्ध ३५० हुमड़ परिवार सागवाड़ा विस्थापित हुवे थे।

दशा हुमड़ जैन महिला परिषद सर्वयशा उदयपुर द्वारा पौधारोपण

श्री दशा हुमड़ जैन महिला परिषद सर्वयशा, उदयपुर की अध्यक्षा आशा मेहता के नेतृत्व में मुख्य अतिथि देवेन्द्र छाप्या व सुन्दरलाल डागरिया की अध्यक्षता में कार्यक्रम संयोजिका डॉ. ज्योत्सना जैन द्वारा समाज के सामूहिक स्थल (चन्द्रवीर भवन) गायरियावास में उदयपुर हरा भरा के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ णमोकार मन्त्र के साथ कर अध्यक्षा श्रीमती आशा मेहता ने बताया कि सर्वयशा ने चन्द्रवीर भवन प्रांगण में 101 पौधे रोपित करने का लक्ष्य रखा है तथा कहा कि वृक्षारोपण हम करें, हो प्राणी कल्याण। प्रकृति रुप में हम करें, ईश्वर का सम्मान। इस अवसर पर वीरेन्द्र धन्नावत, महेन्द्र मेहता, कनकमाला छाप्या व समाज के गणमान्य सदस्य उपस्थित थे, अन्त में सहसचिव सपना जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मुनि दर्पण निशुल्क मासिक पत्रिका प्रकाशन समिति डडूका द्वारा पत्रिका का आगामी अंक आचार्य विद्यासागर विशेषांक के रूप में महावीर जयंती पर प्रकाशित किया जाएगा।

मुनिदर्पण के प्रधान संपादक अजीत कोठिया ने बताया की आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज को श्रद्धांजली के रूप मे प्रकाशित होने वाले इस अंक मे सुधि पाठकों, कवियों, लेखकों एवं पत्रकारों से आचार्य विद्यासागर जी महाराज संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां, सूचनाएं एवं समाचार, संस्करण, उदबोधन आदि 31.08.2024 तक आमंत्रित हैं। मुनि दर्पण प्रकाशन समिति द्वारा आचार्य श्री के संलेखना पूर्ण समाधि मरण पर हार्दिक श्रद्धांजली के रूप में प्रकाशित होने वाले इस विशेषांक मे आचार्य श्री के जीवन के हर घटना क्रम को स्थान देने का प्रयास किया जारहा है। पत्रिका संपादक मंडल के अजीत कोठिया, उत्सव जैन, कमलेश जैन गढ़ी, जयंतीलाल जैन बडोदिया, राजेन्द्र कोठिया डडूका ने आचार्य श्री के व्यक्तित्व एवम् मूक माटी जैसे कृतित्व पर चर्चा कर उनका पाव स्मर णकया।

बहन-बहनोई की सेवानिवृत्ति पर भाइयों ने स्कूलों में दो लाख रुपए देने की घोषणा की

अमूमन खुद की सेवानिवृत्ति पर स्कूल में सहयोग राशि तो ज्यादातर लोग देते ही है, लेकिन पहली बार दो भाईयों ने अपनी शिक्षिका बहन व बहनोई की सेवानिवृत्ति पर दो सरकारी स्कूल राउमावि वनेलापाड़ा व राउप्रवि सीमलखेड़ा को 1-1 लाख रुपए देने की घोषणा की। यह राशि ज्ञान संकल्प पोर्टल के जरिए ऑनलाईन दी जाएगी। दरअसल, कलिंजरा के मूल निवासी व हाल इंदौर के समाजसेवी व उद्योगपति हंसमुख लाल गांधी व रजनीकांत गांधी ने अपनी बहन मीना दोसी शिक्षिका राउमावि वनेलपाड़ा (बागीदौरा) व बहनोई राजेन्द्र दोसी प्रधानाध्यापक राउप्रावि सीमलखेड़ा (सज्जनगढ़) के राजकीय सेवा से सेवानिवृत्ति पर दोनों स्कूलों को 1-1 लाख रुपए का सहयोग देने की घोषणा की गई। इस राशि से दोनों स्कूलों में भौतिक सुविधाएं मुहैया कराई जाएंगी। मीना दोसी 30 जून व राजेन्द्र दोसी 31 जुलाई को सेवानिवृत्ति हुए है। दोनों ने मिलकर वनेलापाड़ा स्कूल में 61 हजार रुपए की लागत की 65 इंच की एलईडी व सीमलखेड़ा को 32 इंच की एलईडी भेंट की। गुरुवार को बागीदौरा आने पर दोनों भामाशाह परिवार ने वनेलापाड़ा स्कूल पहुंचकर संस्था प्रधान मनीष दोसी से स्कूल में संचालित शैक्षिक सह शैक्षिक गतिविधियों की जानकारी ली। स्कूल परिवार ने भामाशाह परिवार को बहुमान कर आभार जताया।

हूमड़ जैन समाज के गौरव

श्रीमान हंसमुख जैन गांधी

एक चलता फिरता सरदार नहीं सरताज, जिसके इर्द गिर्द सितारे परिक्रमा करते रहते, कब हमारा क्रम आवे और इस ताज पर जड़ कर अपने भाग्य पर इठलावें। ऐसा सरताज कोई ओर नहीं, फेडरेशन ऑफ हूमड़ जैन समाज के संस्थापक, प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं वर्तमान मार्गदर्शक कलींजरा के श्री सोहन लालजी के सुपुत्र, इन्दौर निवासी **श्रीमान हंसमुख जैन गांधी** जीनके ताज में भारत सरकार के अल्पसंख्यक आयोग के अन्डर सेकेट्री श्री राजीव मोहन ने पत्र जारी कर कम्युनिटी लीडर्स विशेषज्ञ पेनल सदस्य का पुनः मनोनयन कर नया सितारा जड़ दिया।

श्री मिहिर बाहुबली गांधी

उम्र में युवा, अनुभव में ज्येष्ठ और कर्म में श्रेष्ठ उत्साही हूमड़ गोरव, फेडरेशन ऑफ हूमड़ जैन समाज के पूर्व महामंत्री, वर्तमान कार्यकारिणी सदस्य, सन्मती सेवा दल बहु उद्देशीय संस्था के प्रमुख **श्री मिहिर बाहुबली गांधी,** को श्री भारत वर्षिय दिगंबर जैन तिर्थ क्षेत्र कमेटी मुंबई के महाराष्ट्र अंचल के निर्विरोध अध्यक्ष घोषित होने पर फेडरेशन ऑफ हूमड़ जैन समाज अंतराष्ट्रीय संगठन के समस्त सदस्यों की और से बधाईयाँ। हम भावना भाते हैं आप अपनी कार्य शैली से समाज की अपेक्षा पर खरें उतरें। सम्पूर्ण समाज आपके साथ है।

टाइम्स ऑफ इंडिया ने स्वास्थ्य सेवा में योगदान के लिए इंदौर के चुनिंदा डॉक्टरों को सम्मानित किया। हूमड़ जैन समाज के मुकेश भाई खापरा उनमें से एक हैं। एमपी के ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलादसिंह पटेल ने ये पुरस्कार दिया

शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर हुमड़ समाज की महिलाओ का चयन

विद्यार्थी विकाश मंच समिति उज्जैन प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी माह सितंबर को उज्जैन की कालिदास अकादमी में नेशनल बेस्ट प्रिंसिपल एंड नेशनल टैलेंट अवार्ड का आयोजन किया जाना है जिसमे हुमड़ समाज की शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी ४ शिक्षिकाओं का चयन किया गया है।

डॉ आरती जैन (पाड़लिया), प्रिंसिपल लक्ष्य इंटरनेशनल स्कूल, प्रतापगढ़ (राजस्थान) - डॉ श्वेता जैन, प्रिंसिपल ज्ञायक पब्लिक स्कूल, बांसवाड़ा - श्रीमती दीपाली रोकड़िया, प्रिंसिपल नेल्सन पब्लिक स्कूल बांसवाड़ा राजस्थान को नेशनल बेस्ट प्रिंसिपल अवार्ड २०२३ के लिए एवं श्रीमती नयनबाला रोकड़िया डायरेक्टर नेल्सन पब्लिक सीनियर स्कूल, गढ़ी राजस्थान को लाईफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड फॉर एजुकेशन २०२३ के लिए चयन हुवा है। विद्यार्थी विकाश मंच समिति उज्जैन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं फाउंडर श्री संजीव कुमार पंजाबी, राष्ट्रीय पदाधिकारी श्री जगदीशलाल पाहवा एवं शैलेन्द्र कलवाडिया ने संयुक्त रूप से यह जानकारी दी है। राजस्थान हुमड़ समाज की चयनित शिक्षिकाओं को अग्रिम सुभकामनाये समाज के विभिन्न मंचो के माध्यम से प्राप्त हुई है। फेडरेशन ऑफ़ हुमड़ जैन समाज भी आप सभी के उज्जवल भविस्य की कामना करता है।

हूमड जैन समाज ने स्वतंत्रता दिवस मनाया

श्री हुमड जैन समाज ट्रस्ट इन्दौर के समाज जन ने आज सामूहिक रुप से 78 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह उत्साह पुर्वक निर्माणाधीन हुमड समाज भवन राजमोहल्ला पर मनाया। प्रातः 9 बजे समाज अध्यक्ष श्री पवनजी बागडिया, समाज मंत्री श्री भरतजी पाडलिया, समारोह अतिथी श्री सूर्यकांतजी दोशी, वरिष्ठ सदस्य श्री चंद्रकांतजी दोशी, श्री सुरजमलजी बोबरा व कार्यकारीणी सदस्यो ने ध्वजारोहण किया, ध्वजारोहण पश्चात राष्ट्रगान श्रीमती सीमा भांचावत, श्रीमती वीभा शाह, श्रीमती मनाली तलाटी ने स्वरबद्ध किया. दीप प्रज्जवलन के पश्चात समाज के प्रथम मंत्री वरिष्ठ समाजसेवी डा श्री सुरजमलजी बोबरा साहब ने उपस्थित समाज जन को राष्ट्र के नाम शपथ दिलवाई। अनेक हूमड़ बंधुओं ने राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत गीत हुआ अपनी रचनाओं से समारोह को उंचाई प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन संयोजक श्री यशपाल जुंवा ने किया।

गौरवशाली व्यक्ति

हमारे हुमड़ समाज में कई गौरवशाली व्यक्ति हैं, पर आज हम बात कर रहे हैं भरत जी गांधी नौगामा, तहसील बागीदौरा, जो वर्तमान में विश्व जैन संगठन के नेशनल कमेटी मेंबर हैं। आप 2018 से देव, शास्त्र, गुरु, तीर्थ, धर्म, समाज और संस्कृति के लिए लड़ रहे हैं। आपने सर्वप्रथम 2018 में कल्पेश जी सिंघवी जोधपुर के नेतृत्व में अनुपमंडल के खिलाफ मोर्चा खोला था। आपने मनकूराम से फोन पर चर्चा की, 27 जगह से ज्ञापन दिलवाये, आपके संगठन ने सन् 2021-22 में अनुपमंडल के मुखिया मुकनाराम व अन्य साथियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई जिसके फलस्वरूप कुल 10 लोगों की गिरफ्तारी हुई और वर्तमान में केस चल रहा हैं। जिसमें मुकनाराम व सुमेरपुर में तीन लोगों के खिलाफ व पाली में छह लोगों के खिलाफ चालान पेश किया जा चुका हैं। आपके द्वारा की गई उपरोक्त गतिविधियों से अब अनुमंडल शांत हो गया हैं। आपने अनेक जिनायतनो की रक्षा आंदोलन का नेतृत्व किया, विश्व जैन संगठन ने आपके निस्वार्थ भाव से किए गए अद्भुत कार्यों को देखते हुए 14 फरवरी 2023 को नेशनल कमेटी मेंबर के पद पर मनोनीत किया। आपके द्वारा नागफणी पार्श्वनाथ में कुछ असमाजिक तत्व जीर्णोद्धार के कार्य में अवरोध पैदा कर रहे थे तो उन्हें भी आपने उनके द्वारा किए गए एग्रीमेंट का हवाला देते हुए उनसे भविष्य में ऐसी ग़लती नही करेंगे ऐसा एस डी एम साहब व थानाध्यक्ष के सानिध्य में विडिओ बनवाकर माफी मंगवाई।

भरत जी गांधी नौगामा,

आप एक अच्छे कवि भी हैं आपने अब तक 248 कविताएं लिखी हैं जो YOUR QUOTE एप्लिकेशन पर हैं जिनकी पुस्तक जल्द ही छपकर आने वाली हैं। आपने संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज पर ₹विद्या गुरु₹ शिर्षक से कविता लिखी हैं जो जैन गजट में प्रकाशित हुई हैं और खूब वायरल हो रही हैं,। आप हमेशा देव, शास्त्र, गुरु, तीर्थ, धर्म और संस्कृति के लिए निस्वार्थ भाव से समर्पित होक का करते हैं। हहम आपके उज्जेवल भविष्य की कामना करते है।

श्री हूमड़ युवा मंच द्वारा धार्मिक यात्रा

इस वर्ष राजस्थान की धार्मिक यात्रा 1अगस्त से 5 अगस्त तकथी जिसमें आणिदा पार्श्वनाथ जी, नाकोड़ा जी, रणकपुर, जीवदया क्षेत्र पावापुरी, जीरवाला पार्श्वनाथ आदि धर्मस्थल के दर्शन करवा के यात्रियों को दर्शन लाभ मिला। यात्रा का शुभारंभ समाज भवन महेश नगर से समाज ट्रस्ट, सोशल ग्रुप, भक्तांबर पाठ समिति द्वारा जोरदार स्वागत से की गई। यात्रियों ने बस द्वारा पूरी यात्रा का आनंद उठाया अंत में उदयपुर की सुंदरता को देखकर यात्रा को अंतिम पड़ाव दिया। सभी यात्रियों ने मंच द्वारा की गई व्यवस्था एवं मनोरंजक गेम्स की खूब सराहना की एवं आगे ऐसी यात्राएं करते रहना चाहिए का सुझाव दिया। इसके प्रभारी श्री मनीष जी मिंडा, श्री अजीत जी दोषी, श्री दीपक जी मिंडा एवं निर्देशक अर्पित चंपावत, संयोजक पुनीत सोनल पंचोली, हर्षित खुशबू शाह थे। उक्त जानकारी संयुक्त रुप से अध्यक्ष पूनम पाणोत सचिव अनुपम बक्शी द्वारा दी गई।

श्रीकृष्ण और जैन धर्म

श्रीकृष्ण और जैनियों के 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ चचेरे भाई थे। श्री कृष्ण के पिता वासुदेव और नेमिनाथ के पिता समुद्र विजय भाई थे। जैन शास्त्रों में श्री कृष्ण को अतिविशिष्ट पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है। जैन आगमों में 63 श्लाका पुरुष माने गए हैं जिनमें 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलदेव, 9 वासुदेव तथा 9 प्रति वासुदेव हैं। नेमिनाथ (अरिष्ट नेमि) 22वें तीर्थंकर तथा श्री कृष्ण नौवें अंतिम वासुदेव हैं। शलाका पुरुष अत्यंत तेजस्वी, वर्चस्वी, कांतिमय, अल्पभाषी, प्रियभाषी, सत्यभाषी, सर्वांग सुंदर, ओजस्वी, प्रियदर्शी, गंभीर, अपराजेय आदि गुणों से संपन्न होते हैं। जैन पुराणों के अनुसार श्री कृष्ण भावी तीर्थंकर हैं। नेमिनाथ वैराग्य प्रकृति के थे। श्री कृष्ण के प्रयास से ही नेमिनाथ का विवाह जूनागढ़ के राजा उग्रसेन की पुत्री राजमती से तय हुआ था, किन्तु जब बारात नगर सीमा पर पहुंची तो बाड़े में बंद पशुओं की चीत्कार से नेमिनाथ सिहर उठे। यह देख नेमिनाथ को वैराग्य हो गया। उन्होंने अपने आभूषण उतार कर सारथी को दे दिए और कैवल्य पथ पर चल दिए। श्रीकृष्ण भी उन्हें समझाने में सफल नहीं हो सके।

नेमिनाथ ने जिस स्थान पर दीक्षा ग्रहण की थी, उसी स्थान पर उन्हें कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई। श्रीकृष्ण ने जब यह समाचार सुना, तो वे अपने परिजनों एवं सहस्त्रों राजाओं के साथ हाथी पर बैठ कर नेमिनाथ का दर्शन करने गए। नेमिनाथ ने श्री कृष्ण को निवृत्ति मार्ग पर चलने का उपदेश दिया। नेमिनाथ के पास मयूर पिच्छी थी, जो अहिंसा के लिए जैन मुनि का अनिवार्य साधन होती है। उस पिच्छी से नेमिनाथ ने श्री कृष्ण को जो आशीर्वाद दिया, वह श्री कृष्ण को इतना प्रिय लगा कि उन्होंने मुकुट में मोर पंख धारण करना शुरू कर दिया। श्री कृष्ण नेमिनाथ को आराध्य के रूप में स्वीकारते हैं।

गीता में हिंसात्मक यज्ञ आदि का निषेध है तथा समन्वय की प्रधानता है। इधर, अहिंसा जैन धर्म का सबसे बड़ा सिद्धांत है। नेमिनाथ और श्रीकृष्ण के विचार बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं। यह दोनों महापुरुषों के घनिष्ठ संबंध का प्रबल प्रमाण है। महापुरुष किसी संप्रदाय विशेष की धरोहर नहीं होते। उनका व्यक्तित्व तो सूर्य – चंद्रमा की भांति सार्वभौमिक होता है। उन्हें किसी परिधि में सीमित करना उचित नहीं। कालान्तर मे श्री कृष्ण भगवान महावीर की ही तरह मोक्ष को प्राप्त करेंगे।

...यशपाल जुंवा

ईडर में सम्पन्न हुए शपथ विधि समारोह की कुछ झलकियां

श्रद्धा-सुमन

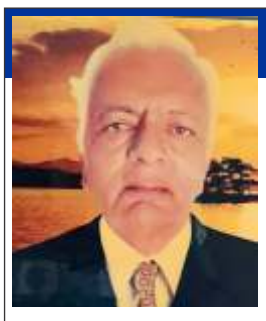

हवाएं कुछ शोख थी, शर्मायी, लजाई मौन थी। जब पूछा तो कुछ यूं बोली, आज एक सूरज अस्त हो गया , आदरणीय श्रीमान नाथूलाल जी भाणदा वालों को यमराज लील गया, सहसा लगा सपना कोई डरा गया, आकर हमें जगा गया। होकर सावधान जब सुध ली, पता चला बात सच थी पर दील को यकिन नहीं हुई। सबका रक्षक, हीत चिन्तन, जो नाथ(परमात्मा) का लाल हो, वो नाथुलाल जी कहीं गये नहीं। एक ज्योत लेकर आए थे, हजारों ज्योत जला गये। परम श्रद्धेय, शिक्षाविद्, सरल स्वभावी, समाजसेवी, **श्रीमान नाथूलाल जी** जीनके आशिर्वाद से अनेक विद्यार्थी उच्च पदों पर आसिन होकर उस ज्ञान मशाल को थामें खड़े हैं । देह से विलग आत्म तत्व तो अजर अमर है, कालातीत है। जो साधुता की अमीट छाप वे छौड़ गये हैं वह चीर काल तक हमारे दिलों पर राज करेगी। हमारा मार्ग प्रशस्त करेगी। हूमड़ इतिहास की रचना में आप प्रमूख स्तम्भ रहे, समाज आपका सदैव ऋणी रहेगा।

दस लक्षण पर्व पर तपस्वियों की अनुमोदना

इस वर्ष दस लक्षण पर्व पर सम्पूर्ण भारत के हूमड़ परिवारों के प्रथम उपवास करने वाले बच्चों के एवं दस उपवास एवं सौलह कारण के जिन तपस्वियों ने उपवास किये है उनके फोटो व नाम हूमड़ वाणी के आगामी अंक में प्रकाशित कर हम अनुमोदना करना चाहते है। अतः तपस्वियों के परिवारजनों से निवेदन है कि तपस्वी के फोटो व नाम शीघ्र ही हमें वाट्सअप नंबर 98260 97101 या humadwani2024@gmail.comपर भेजें, जिसे हम प्रकाशित कर सकें।

श्रद्धांजलि

डॉ वीरेंद्र चंदनमलजी कोरिया इंदौर
श्री दिनेश कुमार सरदारीलालजी दोषी इंदौर
श्रीमती आशा बेन सेखरचंद जी दोषी, मुंबई
श्री ओजस राजेश भाचावत, इंदौर
श्रीमती अनीता गाँधी, मंदसौर
श्री चंद्रशेखर शांतिलालजी शाह, इंदौर
श्री इंदरमलजी किशलालजी पाड़लिया, इंदौर
श्री जयंतिलालजी बंडी, इंदौर
श्रीमती कुमकुम मेहता, मुम्बई
श्री राजेन्द्र तेजकरण जी दोशी, मुम्बई
श्रीमती शांतादेवी कपटी, इंदौर
श्री नगीन लालजी बोगड़ा, इंदौर
श्रीमती अरुणलता खासगीवाला, अजमेर
श्री सुरजमल जी जैन, मालेगांव

मुनि दीक्षा

संपूर्ण हूमड़ जैन समाज के विषय है कि माताजी माताजी, पिताजी क्षु.श्री महाराज, बहन आ.श्री.१०५ मूर्तिमती १०५ समाधि सागरजी आ.श्री.१०५ सुवैभवमती माताजी, बहन गणिनी आ.श्री.१०५ पुनीत चैतन्यमती माताजी (चेलना बेन) के पद चिन्हों पर आगे बढ़ते हुए ... **हूमड़ श्रावक रत्न - श्रीमान प्रदीप जी पन्नालालजी गांधी** (दाहोद निवासी) अपने चारित्रिक उत्थान के लिए 06-09-2024 के शुभ दिवस धर्म नगरी पारसोला (राजस्थान) में आचार्य श्री १०८ शान्तिसागर जी के पटस परम वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री १०८ वर्धमान सागर जी महाराज के कर कमलों से मुनि दीक्षा धारण करेंगे।

humadwani2024@gmail.com

सभी प्रोविंस के पदाधिकारियो से एवं संपूर्ण भारत की संस्थाओ के सम्मानीय पदाधिकारियों से एवं समाज सदस्यों से आग्रह है की हुमड़ जैन समाज का किसी प्रकार की गतिविधि, कोई भी आयोजन , समाज के किसी भी सदस्य को कोई विशेष उपलब्धि मिली हो या समाज के किसी भी सदस्य का देहावसान होता है जो आपकी जानकारी में आता है तो आप हमें उपरोक्त मेल आईडी पर भेज कर जानकारी उपलब्ध करा सकते है , जिससे आपके क्षेत्र की जानकारी को हम हुमड़ वाणी के अंक में प्रकाशित कर सकते है।

पेड़ लगाने का लो संकल्प

पेड़ लगाने का लो संकल्प, क्योंकि प्रकृति एवं जीव को बचाने का यही विकल्प है। संयोजिका डॉ. ज्योत्सना जैन ने कहा कि वृक्षारोपण के लिए 101 पौधों का लक्ष्य रखा गया है। जिसमें छायादार, फलदार, शोभादार पौध अमलतास, गुलमोहर, कनेर, जामुन, आंवला, नीम, गुलाब, चंपा आदि के पौधे लगाए गए। मुख्य अतिथि देवेन्द्र छाप्या एवं अध्यक्षता सुंदरलाल डागरिया ने की। सर्वयशा अध्यक्षा आशा मेहता ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों एवं सदस्यों देवेंद्र छाप्या, सुंदरलाल डागरिया, वीरेन्द्र धनावत, नितिन सगोटिया, उपेंद्रजी, महेन्द्र मेहता, डॉ. ज्योत्सना जैन, कनक माला छाप्या, सुनीता धनावत, ज्योति जैन, लक्ष्मी कोडिया, ललिता तलेटियां, निशा, रुपाली, अंजना, प्रीति, कनक माला संगोटिया, भूमिका धनावत, निर्मला बोबरा, सपना मुरवात, आदि का स्वागत किया एवं सभी को सहयोग देने के लिए आभार व्यक्त किया। सहसचिव सपना जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

संपादक-श्री यशपाल जुवां-9826097101, gmail : humadwani2024@gmail.com, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री महेन्द्र बंडी (राष्ट्रीय महामंत्री) 9827255910 - सन्मति, 29/3, स्नेहलतागंज, इंदौर (म.प्र.) फेडरेशन ऑफ हुमड़ जैन समाज,
पंजीकृत कार्यालय: 9, सिंदुर कॉ-ऑप., हाउसिंग सोसायटी, ईश्वर भवन के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद (गुजरात) 380 014 - अहमदाबाद- से मुद्रि एवं प्रकाशित